भोग गरीब दा ला लै ठाकुरा

भोग गरीब दा ला लै ठाकुरा (धन्ना जट्ट)

तर्ज :- अच्छा सिला दिया तूं ने मेरे प्यार का

भोग गरीब दा ला लै ठाकुरा।
मक्की दा ढोडा साग खा लै ठाकुरा ॥

इक इक गन्दल नूँ आप तोड्या।
बड़े प्रेम नाल साग नूँ संजोड्या ॥
बैठ खुले खेतां विच खा लै ठाकुरा
भोग गरीब दा।

भिलनी दे बेर सतू सुदामे दे।
कई वार दुध पीता घर नामे दे ॥
मेरी वी रूखी मिसी खा लै ठाकुरा
भोग गरीब दा।

मखन मलाई दुध दी ना घाट ए।
घर दे गां वच्छे, लस्सी वी स्वाद ए ॥
पीड़ रखे गन्ने, धन्नें आ जा ठाकुरा
भोग गरीब दा।

पांधे तेरी बड़ी उपमा सुनाई ए।
पर मैं अनपढ़ न समझ आई ए ॥
आके आपे आरती करा लै ठाकुरा -
भोग गरीब दा।

सिधा सादा जट्ट, जट्ट तो नां डर वे।
जदो जी चाहवे आ जावीं घर वे ॥
आखदा 'मधुप' अपना लै ठाकुरा
भोग गरीब दा।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/34851/title/bhog-garib-da-la-lai-thakura

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |